**International Journal of Advanced Education and Research**
**ISSN: 2455-5746**
**Impact Factor: RJIF 5.34**
**www.alleducationjournal.com**
**Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 70-71**

# अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को विकसित करने में शिक्षक/शिक्षिकाओं की भूमिका

**अंजनी कुमार द्विवेदी**
प्रवक्ता, सीताराम समर्पण पी0जी0 कालेज, नरैनी, बॉदा, उत्तर प्रदेश, भारत।

**प्रस्तावना**

वर्तमान में दुनिया एक ज्वालामुखी के समान है जो किसी भी समय फटकर विश्व के अस्तित्व को समाप्त कर सकती है। अभी तक दुनियॉ दो विनाशकारी विश्वयुद्ध देख चुकी है। अगर काबू नहीं पाया गया तो दुनियॉ तीसरे विश्वयुद्ध के द्वारा पहुॅच जायेगी।

दूसरी ओर यदि विश्व के समस्त देश और समस्त निवासी आपस में प्रेम मैत्री और सहयोग के साथ रहते हैं तो यही अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना कहलाता है।

**व्यक्तिगत सुझाव** : यदि व्यक्तियों के दिलों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के भाव जगाना है तो उनको याद दिलाना होगा कि वह इन्शान पहले है और यही हमारी पहचान है अन्य सभी बाद में है। ईश्वर ने हम सभी को एक जैसा बनाया है फिर भी एक ही देश के दायरे हम कसे रह सकते हैं। अर्थात आपस में मतभेद कैसे रख सकते हैं। हमें वसुधैव कुटुम्बकम को अपनाना होगा या यह कहें कि अन्तर्राष्ट्रय सद्भावना को विकसित करना होगा।

विश्व की जनता को चाहिये कि वह राजनेताओं की बातों में न आकर खुद फैसला करें क्योंकि ये तो अपने पद और कुर्सी की रक्षा के लिये भ्रांतियॉ फैलाते हैं। अतः हमें चाहिये कि हम अपने विवेक से काम लें।

इसके साथ ही शिक्षक/शिक्षिकायें भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं जो निम्न हैंः–

**1. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की अभिवृत्ति करना** : शिक्षक/शिक्षिकाओं का अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास ही नहीं करना चाहिये अपितु स्वयं भी इसका पालन करना चाहिये क्योंकि दुनियॉ बदलने से पहले खुद को बदलना होगा।

**2. लेखों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना जगाना** : शिक्षक/शिक्षिकायें विभिन्न पत्र–पत्रिकायें एवं अखबार द्वारा ऐसे लेख प्रकाशित करें जो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करे।

**3. रैलियों एवं गोष्ठियों का आयोजन** : देश के सभी शिक्षक/शिक्षिकाओं को अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं एकता से सम्बन्धित गोष्ठियों का आयोजन कर अपने विचार व्यक्त करने चाहिये।

**4. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं एकता से सम्बन्धित पुस्तकों का प्रकाशन** : शिक्षक/शिक्षिकाओं को चाहिये कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं एकता से सम्बन्धित पुस्तकों का प्रकाशन करें एवं सभी विद्यालयों में ये पुस्तकें पढ़ायी जायें ताकि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना विकसित हो सके।

**5. अन्तर्राष्ट्रीय जगत के ज्ञान में रुचि** : शिक्षक/शिक्षिकाओं को अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य जैसे स्वतंत्रता, समानता, न्याय बन्धुत्व का ज्ञान छात्रों को कराना चाहिये और विश्व की समस्याओं में उनकी रुचि उत्पन्न करनी चाहिये।

**6. षिक्षा का प्रसारः** अन्तर्राश्ट्रीय सद्भावना को विकसित करने के लिये जरूरी है कि षिक्षा व्यवस्था को सुधारा जायें पाठयक्रम ऐसा हो कि अन्तर्राश्ट्रीय सद्भावना को बढावा मिले तथा षिक्षा के साधन सभी देषों में समान हो तथा सम्पर्क भाशा को बढावा दिया जायें ताकि लोग एक–दूसरे के निकट आये एवं षिक्षा के द्वारा ऐंसा वातावरण पैदा किया जायें कि जिससे अंतर्राश्ट्रीय सद्भावना को बढावा मिले।

**7. विभिन्न सम्प्रदाय के लोगों से घर–घर जाकर सम्पर्क करनाः** आज समाज में प्रत्येक सम्प्रदाय के लोग एक–दूसरे से घृणा करते है और उनकी धर्म की आलोचना करते है जिससे आपसी भेद–भाव बढ़ता है जो आगें चलकर संघर्श का रूप ले लेता है इसलिए षिक्षक– षिक्षकाओं को चाहिए कि सभी सम्प्रदायें के लोगों के घर–घर जाकर सम्पर्क स्थापित करे। ताकि उनके विचारों को जान सके और अर्न्राश्ट्रीय सद्भाव विकसित हो सके।

**8. संयुक्त संस्कृति एवं षैक्षिक संगठनों की स्थापनाः** विभिन्न देषों में ऐसे सांस्कृतिक संगठनों की स्थापना होनी चाहिए जिससे लोग आपस में मिले–जुले और षिक्षक–षिक्षकाओं को चाहिए कि वो ऐसे षिक्षक संगठनों की स्थापना करे जिससें सभी सम्प्रदायें के विद्यार्थी मिलजुल कर षिक्षा प्राप्त कर सके।

**9. लेखों द्वारा अंधविष्वासों का खण्डनः** आज समाज के चारों ओर धर्म के नाम पर अंधविष्वास फैला हुआ है। षिक्षक–षिक्षकाओं को चाहिए कि ऐसे लेख प्रकाषित करे जिससे अंधविष्वास समाप्त हो सके।

**10. सहकारी कमेटियों द्वारा अंतर्राश्ट्रीय सद्भावना को बढावाः** प्रत्येक समाज में षिक्षकों को चाहिए कि वे ऐसी सहकारी कमेटियां तैयार करें जो अंतराश्ट्रीय सद्भावना को बढावा दे।

**11. संस्थाओं और दलों पर प्रतिबन्धः** प्रत्येक षिक्षक षिक्षकाओं को चाहिए कि सम्प्रदायिक संस्थाओं और दलो को समाप्त करने के लिए आवाज उठायें ताकि अंतर्राश्ट्रीय सद्भावना को बढावा मिले।

**12. अंतराश्ट्रीय जगत के ज्ञान में रूचिः** षिक्षक–षिक्षकाओं अंतर्राश्ट्रीय मूल्य जैसे स्वतंता, समानता, न्याय, बन्धुत्व का ज्ञान

छात्रों को कराना चाहिए और विष्व की समास्याओं में उनकी रूचि उत्पन्न करनी चाहिए।

## भावी शोध हेतु सुझाव

अपने सीमित संसाधनों और सीमित समय के कारण शोधकर्ता प्रस्तुत विषय का गहन अध्यय करने में अस्मर्थ रहा है। अतः इसका अध्ययन निम्न स्तरों पर करना चाहिये :–

1. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं नैतिक शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।
2. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के संदर्भ में प्राचीनकाल और आधुनिक काल का तुलनात्मक अध्ययन।

## संदर्भ

1. पी0डी0 पाठक 2007 शिक्षा के सिद्धॉत विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. डॉ0 मालती सारस्वत 2005 माध्यमिक शिक्षा सिद्धॉत आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. पुखराज जैन 2007 भारत का अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन एवं भारतीय संविधान साहित्य भवन, आगरा।
4. राय पारसनाथ 2009 अनुसंधान परिचय लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।